उपसंहार

इस प्रकार "देह व्यापार" विश्व के सभी देशों में किसी न किसी रूपों में व्याप्त है। इसे रोकने के लिए सभी देश प्रयासरत भी हैं, लेकिन उनमें से ही कुछ विकसित देशों ने देह व्यापार को कानूनी मान्यता दे रखा है। ऐसे में दूसरे विकासशील देश जो अभी अपनी मूलभूत आवश्यकओं के लिए संघर्ष कर रहें। उनके यहाँ देह व्यापार को कानूनी मान्यता देना उचित नही हैं क्योंकि विकासशील देशों में आर्थिक रूप से जूझ रही स्त्रियों के लिए यह सबसे सुविधाजनक व्यापार होगा। इस व्यापार में किसी शिक्षा कौशल की जरूरत नही होती हैं। इसलिए जरूरी हैं, कि इसे रोकने का प्रयास किया जाय।

मोहनदास नैमिशराय ने देह व्यापार को भारतीय परिपेक्ष्य में स्पष्ट किया है, क्योंकि भारत में देह व्यापार प्राचीन काल से लेकर अब तक किसी न किसी रूप में मौजूद रहा है। वहीं दूसरी तरफ इसके ख़त्म करने के प्रयास भी किये जाते रहे हैं, लेकिन कभी धर्मसत्ता, राजसत्ता की खोखली राजनीति ने देह व्यापार को जड़ से खत्म करने का प्रयास नहीं किया, जिसके परिणाम स्वरूप भारत में आज भी स्त्री के खरीद-परोख्त और उसे भोगने की परम्परा जीवित हैं।

नैमिशराय ने अपने उपन्यास में स्त्री पात्रों के माध्यम से भारतीय और पाश्चात्य विचार धाराओं का मिला-जुला रूप प्रस्तुत किया हैं। जैसे किसी पात्र के लिए देह व्यापार आजीविका का साधन हैं, तो किसी के लिये सामाजिक बुराई। किसी के लिए व्यक्तिक आजादी हैं, तो किसी के लिये घृणित अपराध | इस तरह दोनों तरह की स्त्रियों का चित्रण कर मोहनदास नैमिशराय ने स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति प्रवेश कर चुकी है, उसको अपनाना है तो पहले अपने सामाज की मूलभूत परम्परागत संरचना को बदलना होगा, जैसे देह व्यापार भारत में आज भी वेश्यालयों के अलावा भी होता हैं लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से किसी को ज्ञात नहीं होता।

इसी तरह नैमिशराय ने उपन्यास में उस महानगरीय संस्कृति का चित्रण समग्रता से किया है। जहाँ सभी भौतिक आवश्यकताओं का उपभोग किया जाता हैं। जैसे देह व्यापार का वर्णन मुंबई के सन्दर्भ में करते हुए स्पष्ट करते हैं। कि मुम्बई जैसे महानगर में ऐसे हज्जारों कोठे मिल जायेगें जहाँ एक तरफ कानून का पहरा वहीं दूसरी ओर देह व्यापार की खरीदारी। दूर-दराज से आई स्त्रिया अपने जीवन-यापन के लिये देह व्यापार कर अपनी आजीविका चलाती है हजारों लड़किया मिल जायेगी। वही दूसरी ओर इनको खरीदने के लिए पुरुष भी भटकते दिख जायेगें।

नैमिशराय ने कोठे पर रहने वाली वेश्याओं का एक अलग चित्र भी प्रस्तुत किया हैं, जहाँ उन्हें एक तरफ समाज हीन दृष्टि से देखता हैं, वही उन वेश्याओं में एक परिवार की संरचना देखने को मिलती हैं, उनमें और एक साधारण परिवार में कोई अंतर नही दिखाई देता हैं वो आपस में मिल-झूल कर रहती हैं।

इस तरह नैमिशराय ने देह व्यापार की राजनीति की उन सभी बुराइयों का पर्दाफास किया हैं। जो हमारे समाज में मौजूद हैं। उसके सुधारने का कैसे प्रयास किया जा सकता हैं ? इस उपन्यास में देख सकते हैं।